

विद्यालय पत्रिका
2023-24

केन्द्रीय विद्यालय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर
वाराणसी



**KENDRIYA VIDYALAYA
BHU CAMPUS, VARANASI**

विद्यालय पत्रिका
2023-24

VIDYALAYA PATRIKA
2023-24

केन्द्रीय विद्यालय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर
वाराणसी

KENDRIYA VIDYALAYA
BHU CAMPUS, VARANASI

प्राचार्य का सन्देश



विद्यालय-पत्रिका छात्र-छात्राओं की रचनात्मक प्रतिभा के प्रदर्शन और निखारने का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। यूँ तो छात्र-छात्राओं में रचनात्मक प्रतिभा बहुत अधिक होती है परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि उन्हें बच्चों को अपनी मौलिक अभिव्यक्ति की पूरी स्वतंत्रता देनी चाहिए तभी वे अपने मन की बात लिखना सीख सकेंगे। बच्चों की रचनाओं में अपरिपक्वता तो रहती ही है, परन्तु यह अपरिपक्वता ही उनकी मौलिकता का परिचायक है। विद्यालय-पत्रिका की यह अपनी विशेषता है कि इसके लिए छात्रों को मौलिक रचनाएँ लिखने हेतु प्रेरित किया जाता है।

मैं उन सभी अभिभावकों, छात्रों, शिक्षक-शिक्षिकाओं, विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों तथा अति-सम्मानित उच्चाधिकारियों के प्रति विनम्र आभार व्यक्त करता हूँ। शिक्षकगण एवं सम्पादक-मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ। इस प्रयास से छात्रों में निहित रचनात्मक प्रतिभा उभरस कर सामने आ सकेगी तथा इन्हीं छात्रों में से भविष्य में कुछ अच्छे पत्रकार, लेखक व कवि के रूप में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना सकेंगे यह मेरा सहज विश्वास है।

डा० दिवाकर सिंह
प्राचार्य

उप-प्राचार्य का सन्देश

विद्यालय-पत्रिका अपने विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए संगमिल के रूप में कार्य करती है। विद्यालय-पत्रिका में संकलित रचनाओं से यह भी स्पष्ट है कि लेखन-अभ्यास से हमारे भीतर मौजूद साहित्यिक रचनाओं में निखार लाया जा सकता है, जिससे हर कार्य में उत्कृष्टता का ध्यान रखना आदत बन जाती है। विद्यार्थी-जीवन अपने आप को उन श्रेष्ठ आदतों को अपनाने का सर्वाधिक उचित समय है। स्वस्थ रहें, स्वस्थ सोचें और श्रेष्ठ लिखें।

मैं छात्रों, अभिभावकों और संपूर्ण संपादकीय टीम को इस सपने को सच करने के लिए उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण के लिए बधाई देता हूं।

विनीता सिंह
उप-प्राचार्या



अनुक्रम

क्रम	रचना	रचनाकार/ प्रस्तोता	पृष्ठ
1	उदासी	रूही मिश्रा, III-सी	7
2	मेरा स्कूल	आरुष कुमार, III-सी	8
3	ही! ही! ही!	श्रेयांश दुबे, IV-बी	9
4	हे आम! तुम फलों के राजा हो	अथर्व तिवारी, IV-बी	10
5	प्रेम भार नहीं!	श्रेयांश दुबे, IV बी	11
6	शिक्षक महिमा	शौर्य पांडेय, IV-बी	12
7	विद्यालय हमारा	पंखुडी सिंह, IV-बी	13
8	क्या खोजते हो दुनिया में	मंजरी सिंह, VII-सी	14
9	शिक्षा एवं विद्यार्थी के मूल मंत्र	सन्ध्या कन्नौजिया, VII-सी	15
10	हा! हा! हा!	आराध्या सृष्टि, VII-सी	16
11	नारी	ऐश्वर्या मस्करा, XI-सी	17
12	स्वर्गोत्सव	ऐश्वर्या मस्करा, XI-सी	18
13	जब-जब थककर उलझो, तब-तब लम्बी तानो!	आस्था गुप्ता, VII-सी	19
14	चुटकुले	अभिनव कुमार यादव, IX-बी	20
15	धरा देखकर	अनुराग पांडेय, XI-बी	21
16	गरीबी में अमीरी	जीवेश मौर्य, XII-ए	22
17	नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और आज़ाद हिन्द फ़ौज़	स्मृति तिवारी, XIIडी	24
18	दादी मां	शिवेश मौर्य, XI-बी	27
19	जाने दो!	विदुषी मिश्र, XI-बी	28
20	विज्ञान के चपल चरण	अविनाश कुमार यादव, XI-बी	29
21	मंज़िल	मुग्धाराज, XI-बी	30
22	यादें	श्रेयश मिश्रा, XI-बी	31
23	गवाह दोनों तरफ़ से बुलाए जाएं तो बेहतर होगा	श्रेयश मिश्रा, XI-बी	32
24	अहं ब्रह्मास्मि!	रुद्रांश चौधरी, VIII-बी	33
25	हिमाचल कथा	प्रिया मौर्या, X-ए	36
26	सुनो द्रौपदी!	मान्या, XII-ए	37

27	अंग्रेज़ी का भूत	सूर्याश, IX-सी	38
28	जगत की प्यास	राघव किंकर, VIII-बी	39
29	तीन साधुओं की कहानी	अनन्या कुशवाहा	40
30	I UNDERSTAND...	HIMANI ANAND SA, XI B	42
31	FAILURE	AVINASH KUMAR YADAV, XI B	43
32	BRAIN TEASER	AVINASH KUMAR YADAV, XI B	44
33	LIFE : A JOURNEY	AVINASH KUMAR YADAV, XI B	45
34	RECIPE TO MAKE A GOOD STUDENT	AVINASH KUMAR YADAV, XI B	46
35	REASON FOR YOU TO HAVE A GOOD SLEEP	REETIKA KUMARI, XI B	47
36	THE MASTERPIECE	APOORVA UPADHYAYA, XI A	49
37	STEPHEN HOWKING-MY FAVOURITE SCIENTIST	SHASHWAT KABEER, X C	50
38	WHO AM I?	PARIDHI VERMA, XII A	53
39	A POEM TO MOTIVATE YOU	SUSHIL KUMAR, HM	54
40	THOUGHT	ANSHIKA TRIPATHI, VII B	56
41	WHAT IS A FRIEND	ANSHIKA TRIPATHI, VII B	56
42	WHAT MAKES YOUR PARENTS HAPPY?	ANSHIKA TRIPATHI, VII B	57
43	BETTER TOMORROW	VIDYASAGAR, IX C	58
44	WHY ME?	VIDYASAGAR, IX C	59
45	EDUCATION	MANYA, XI A	60
46	THE SUN	PRIYESH KUMAR SINGH, IX B	61
47	THOSE TEARS	SHREYAS MONDAL, XI A	62
48	VISUALIZING SOUND	SHREYAS MONDAL, XI A	63

उदासी

गुम गई मुस्कराहटें हैं
अब उदासी छाई है-
गुम गए हंसी के ठहाके
अब न खुशियाँ छाई हैं।

ग्रस्त हैं सब अपने कामों में
अब कहाँ किसी को समय है
गुम गए हंसी के ठहाके
अब न खुशियाँ छाई हैं।

अब परिवारों में मतभेद है
अब कहाँ पहले जैसा प्यार है
गुम गए हंसी के ठहाके
अब न खुशियाँ छाई हैं।

~रूही मिश्रा
3-सी द्वारा संकलित

मेरा स्कूल

कितना सुन्दर है मेरा स्कूल
इसमें रंग-बिरंगे फूल।
फूल सुन्दर सबको भाते
उन्हें देखकर हम ललचाते।

टीचर हमको पाठ पढ़ाते
नई-नई बातें सिखलाते,
फूलों से गिनती करवाते
ज्ञान की बातें हमें बताते।

~आरुष कुमार
3-सी

ही ! ही ! ही!

एक आदमी ने चिंटू से पूछा-बेटा, आपके पापा का क्या नाम है?

चिंटू ने कुछ सोचते हुए उत्तर दिया-अंकल, अभी उनका नाम नहीं रखा है, मैंने।

बस, प्यार से पापा ही कहता हूँ!

~श्रेयांश दुबे

4-बी

हे आम, तुम फलों के राजा हो!

गरमी में आते हो
ठंडक में खो जाते हो।

गरमी में आते हो
आकर गाना गाते हो
ठंडक में हमें रुलाते हो
फलों के तुम राजा हो
बजाते हमारा बाजा हो
हरे हो तो खट्टे हो
पीले हो तो मीठे हो
कैसे तुम रंग बदलते हो
क्यों नहीं हमें बतलाते हो?
क्यों रुलाते हो?
हे आम, तुम फलों के राजा हो!
आम, तुम्हारे कितने दाम?

~अथर्व तिवारी

4-बी

प्रेम भार नहीं!

यह कहानी हिमाचल प्रदेश में रहने वाली एक लड़की की है।

वह अपने माता-पिता और भाई के साथ रहती थी। माता-पिता खेतों में काम करते थे। उनके घर में न रहने पर वह लड़की स्कूल से लौटकर अपने स्कूल का कार्य करती थी, फिर छोटे भाई के साथ खेलती थी। छोटा भाई हमेशा घर पर ही रहता था। एक दिन भाई ने अपनी बहन के सामने इच्छा ज़ाहिर की कि वह पहाड़ों पर घूमना चाहता है। उस बहन ने भाई को अपनी पीठ पर बांध लिया और उसे घुमाने लगी।

साधुओं की एक मंडली ने देखा कि एक छोटी-सी लड़की पीठ पर कोई चीज़ लादे हुए पहाड़ पर चढ़ रही थी। साधुओं ने आपस में कहा-देखो, वह बहादुर लड़की कितना भार लेकर पहाड़ पर चढ़ रही है!

लड़की पास आई तो एक साधु ने पुछा-तुम इतना भार लेकर पहाड़ पर कैसे चढ़ रही हो?

लड़की ने उत्तर दिया-ये भार नहीं, मेरा भाई है।

सच है, जो हमें प्रिय होता है, हम उसे भार नहीं समझते हैं, न उसका भार महसूस होता है।

अगर हम अपने कार्य को अपना समझ कर करें, तो वह भार नहीं होता।

एक विद्यार्थी के रूप में पढ़ना-लिखना भी हमारा कार्य है।

~श्रेयांश दुबे
4-बी द्वारा संकलित

शिक्षक-महिमा

शिक्षक की गोद में उत्थान पलता है,
जहान सारा शिक्षक के पीछे चलता है।
शिक्षक का बोया पेड़ बनाता है
हज़ारो बीज वही पेड़ जनता है।

काल की गति को शिक्षक मोड़ सकता है,
शिक्षक धरा से अम्बर को जोड़ सकता है।
शिक्षक की महिमा महान होती है,
शिक्षक बिन अधूरी वसुंधरा रहती है।

याद रखो, चाणक्य ने इतिहास बना डाला था
क्रूर मगध राजा को मिट्टी में मिला डाला था।
बालक चन्द्रगुप्त को चक्रवर्ती सम्राट बनाया था,
एक शिक्षक ने अपना लोहा मनवाया था।

संदीपनी से गुरु सदियों से होते आए हैं,
कृष्ण जैसे नहें-नन्हें बीज बोते आए हैं।
शिक्षक से ही अर्जुन-युधिष्ठिर जैसे नाम हैं,
शिक्षक की निंदा करने से दुर्योधन बदनाम है।

शिक्षक की दयादृष्टि से ही बालक राम बना जाते हैं,
शिक्षक की अनदेखी वे वे रावण भी कहलाते हैं।
शिक्षक की गोद में उत्थान पलता है,
जहान सारा शिक्षक के पीछे चलता है।

~शौर्य पाण्डेय
4-बी द्वारा संकलित

विद्यालय हमारा

केन्द्रीय विद्यालय बीएचयू हमारा,
सबसे है प्यारा, ये आँखों का तारा।

होती है पूजा, गुरुजन के ज्ञान का
रखता है अभिमान अपने कीर्तिमान का।

सदाचार, संयम, अनुशासन हमारा
सबसे है प्यारा, ये आँखों का तारा।

गंगा कारण जिसके धोती स्वयं है
निर्मल है पावन, जो इसका भवन है।

माँ सरस्वती का है सबल सहारा
सबसे है प्यारा, ये आँखों का तारा।

खुद में मिसाल है, पाया जो मुकाम है,
महामना-परिसर में अनुपम संस्थान है।

शिक्षा की निरंतर, बहे जल-धारा,
सबसे है प्यारा, ये आँखों का तारा।

ज्योति जलती रहे, हो यही कामना,
पठान-पाठन की जिसमें करें साधना।

महामना का अनुपम ये संस्थान है
पढ़ने वाले सभी इसकी संतान हैं।

केन्द्रीय विद्यालय बीएचयू हमारा,
सबसे है प्यारा, ये आँखों का तारा।

~पंखुड़ी सिंह
4-बी

क्या खोजते हो दुनिया में...?

क्या खोजते हो दुनिया में!
जब सब कुछ तेरे अन्दर है।
क्यों देखते हो औरों में,
जब मन ही तेरा दर्पण है!



दुनिया बन एक दौड़ नहीं,
तू भी अश्व नहीं है धावक।
रुककर खुद से बातें करा ले,
अंतर्मन को शांत तो कर ले।

सपनों की गहराई समझो,
अपने अन्दर अच्छाई समझो।
जीवन को तुम खुलकर जी लो-
क्या खोजते हो दुनिया में!

आलस्य तुम्हारा दुश्मन है तो
पुरुषार्थ को अपना दोस्त बना लो।
जीवन का ये रहस्य समझकर
खुशियों से तुम नाता जोड़ो।

~मंजरी सिंह
7-सी द्वारा संकलित

शिक्षा एवं विद्यार्थी के मूल मंत्र

जीवन का सर्वांगीण विकास शिक्षा का मूलमंत्र है।



शिक्षा की ऐसी व्यवस्था हो कि विद्यार्थी अपनी शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक शक्तियों का विकास कर आगे चलकर सच्चाई और ईमानदारी अपनाकर एवं परिश्रम करके अपना जीवन निर्वाह कर सके, समाज में आदरणीय और विश्वासपात्र बन सके तथा देशभक्ति से, जो मनुष्य को उच्च कोटि की सेवा करने को प्रेरित करती है, अपने जीवन को अलंकृत कर राष्ट्र की सेवा कर सके।

विद्यार्थियों को उच्च संस्कृति और सामाजिक उपलब्धियों का बोध कराया जाए, ताकि विद्यार्थी अपने देश और समाज की बौद्धिक समृद्धि की जानकारी प्राप्त कर सकें, वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपना सकें तथा जीवन को संतुलित बना सकें।

~संध्या कन्नौजिया
7-सी

हा! हा! हा!

मैडम- बच्चों, आज तुम्हारा पहला दिन है। जो पूछना हो, पूछो!
बच्चे- मैडम, छुट्टी कब होगी?



रेस्तरां में ग्राहक- ऐसी चाय पिलाओ, जिसे पीकर मन खुश हो जाए और झूमकर नाचने लगे...

वेटर- सर, हमारे यहाँ भैंस का दूध आता है, जिससे चाय बनती है, नागिन का नहीं!

~आराध्या सृष्टि
7-सी

नारी

औरत है वो, जननी इस धरती की!

हाँ, वो ही माँ कहलाती है!

बोझ उठाती एक नए युग का, कष्ट सभी सह जाती है।

सबके लिए अपार स्नेह, खुद की कोई अभिलाषा नहीं,

है ईश्वर भी जाने उसी ने, पर प्रतीति की कोई आशा नहीं!

पुरुष प्रधान समाज हमारा, क्यों उसे ही ऐसा भाग्य मिला

निश्चल पतिव्रत का प्रतिफल, सीता को भी परित्याग दिया!



हां, उसी ने दी अग्नि-परीक्षाएं, सती बन प्राण तजे उसने
क्यों भूलते हो विनाशक शक्ति, काली सम रूप रचे उसने!

यह सोच के उसे मारा कि बेटों से वंश चलता है

मत भूलो, कोख उसी के पास है, उसके बिन बेटा कहाँ पलता है!

उसमें ही है झांसीवाली और कौशल्या-यशोदा समाई

उसका ऋण क्या चुकाओगे, उतनी नहीं समाई!

हर क्षेत्र में जो जग जीते स्त्री ने, उसके असंख्य उदाहरण हैं

न ही निर्बल, न ही अबला, जब करती शौर्य वो धारण है!

पूजनीय वह नारी, ईश्वर भी जिससे शक्ति लेता है

बिन नारी अस्तित्व नहीं, नारी ही सृष्टि-प्रणेता है!

औरत है वो जननी इस धरती की, हां, वो ही माँ कहलाती है

मिले सम्मान और अधिकार समान, इतना-सा तो चाहती है!

~ऐश्वर्या मस्करा

11-सी

स्वर्गोत्सव

थरति हाथ जोड़े यमराज ने, काल ने भी शीश झुकाया
मस्तक सगर्व उठा है इसका, देव-विमान पर कौन है आया!
जिसने शौर्य को किया परिभाषित, शहीद हुआ देश रक्षा पर
अभिनन्दन करते देव द्वार पर, स्वर्ग ने भी उत्सव मनाया!



तिरंगे की शान पर मिट, मातृभूमि की पीड़ा हरता है
लिपट तिरंगा तन से इसके, खुद को गौरवान्वित करता है!
माटी ने इस भारत माँ की सपूत ऐसे जाने असंख्य
सूर्य तेज से इसके कांपता, दुश्मन भी भय से मरता है!
पूजनीय वह माता जिसने धरा की रज दूध से तोली
धर्म-यज्ञ में आहुति पुत्र की पिता ने दी लगाकर रोली।
पत्नी ने मांग के सिन्दूर से किया देश का विजय-तिलक
सूना हुआ वह आँगन देखो, इस अर्जुन ने जहाँ आखें खोलीं।

रक्त-राजित शव देख भाई-बहन के न आंसू छलके
बेटा लेता प्राण, देखो, अब हम हैं योद्धा कल के!
वीरता बहती रगों में हमारी, इतिहास भी देता इसकी गवाही
रखे कदम जब ज़मीन पर हमारी, स्वतः शत्रु मरण को ढलके!

अफ़सोस माँ, बस इतनी सेवा ही तेरी मैं कर पाया
आत्मा मेरी ऋणी है तेरी, क्यों साथ छोड़ गयी यह काया!
सौगंध हमें इस मिट्टी की, तेरा शीश नहीं झुकने देंगे
पुनः सुसंस्कृत करना मुझको, पुनः बताना अपना जाया!

~ऐश्वर्या मस्करा
11-सी

जब-जब थककर उलझो , तब-तब लम्बी तानो!

देखो, सोचो, समझो, सुनो, गुनो और जानो
इसको, उसको, संभव हो निज को पहचानो!

लेकिन अपना चेहरा है जैसा, रहने दो
जीवन की धारा में अपने को बहने दो!

तुम जो कुछ हो, वही रहोगे, मेरी मानो,
वैसे तुम चेतन हो, तुम प्रबुद्ध ज्ञानी हो
तुम समर्थ, तुम कर्त्ता, अतिशय अभिमानी हो!



लेकिन अचरज इतना, तुम कितने भोले हो
ऊपर से ठोस दिखो, अन्दर से पोल हो!
बनकर मिट जाने की हो तुम एक कहानी हो !

पल में रो देते हो, पल में हंस पड़ते हो
अपने में रमकर तुम अपने से लड़ते हो
पर यह सब तुम करते, इसपर मुझको शक है!
दर्शन-मीमांसा, यह फुरसत की बक-झक है!

जमने की कोशिश में रोज़ तुम उखड़ते हो,
थोड़ी सी घुटन और थोड़ी रंगीनी में
चुटकी भर मिर्ची में मुठ्ठी भर चीनी में
ज़िंदगी तुम्हारी सीमित है, इतना सच है!

इससे जो कुछ ज्यादा, वह सब तो लालच है!

दोस्त, उम्र कटने दो इस तमाशबीनी में
धोखा है प्रेम-बैर, इनको तुम मत ठानो!
कड़ुआ या मीठा, रस को छककर छानो !

चलने का अंत अन्हीन, दिशा-ज्ञान कच्चा है
भ्रमने का मार्ग ही सीधा है, सच्चा है !
जब-जब थककर उलझो, तब-तब लम्बी तानो!

~आस्था गुप्ता
7-सी द्वारा संकलित

चुटकुले

औरंगजेब ने अपने सेनापति से पूछा-हम शिवाजी को क्यों नहीं ढूँढ पा रहे हैं?
सेनापति-जहाँपनाह, हम मुगल हैं, गूगल नहीं।

एक पति-पत्नी होटल में गये।

वेटर – क्या लेंगे सर ?

पत्नी -सब्जी वाली रोटी

वेटर- क्या?

पति- अरे, भाई, गाँव की है! पिज्जा माँग रही है।

गोलू -सर आई एम गोइंग का मतलब क्या होता है?

टीचर- मैं जा रहा हूँ।

गोलू -क्यों सर? बताइए न, प्लीज।

टीचर- अरे! मैंने बोला ना मैं जा रहा हूँ।

गोलू -बता के तो जाइए।

राहुल – मम्मी, आज मुझे सौ मार्क्स मिले।

मम्मी – बहुत अच्छा! तुम्हें सौ मार्क्स किसमें मिले?

राहुल –गणित में चालीस, विज्ञान में तीस और इंग्लिश में तीस।

अभिनव कुमार यादव

9-बी

धरा देखकर !

चाँद अपने हृदय में तपिश भर रहा,
सूर्य जलने लगा है धरा देखकर!

फूल मुरझा गए हैं चमन के सभी,
छाँव करते बगीचे सिमटने लगे,
जल निरन्तर जमीं छोड़ते जा रही,
छोटे-छोटे सभी पेड़ कटने लगे!
झेलना तो बहुत कुछ पड़ेगा तुम्हें,
गर सँभलते नहीं तुम ज़रा देखकर!
चाँद अपने हृदय में तपिश भर रहा,
सूर्य जलने लगा है धरा देखकर!

फेंकते हैं सभी कचरे अब रोड पर,
स्वच्छ रखने की आदत हटी जा रही!
ये हवा हम निरन्तर दूषित कर रहे,
साँस लेने की क्षमता घटी जा रही!
ये धरा है धरोहर, सहेजो इसे,
वरना मर जाओगे अधमरा देखकर!

चाँद अपने हृदय में तपिश भर रहा,
सूर्य जलने लगा है धरा देखकर!

अनुराग पाण्डेय

11-डी

गरीबी में अमीरी

राघव नाम का एक लड़का, जिसके पिता एक किसान थे, वह शहर पढ़ाई करने आया, पर शहर की चकाचौंध ने उसे थोड़ा बदल दिया। अब वह लोगों के लिए एक गरीब किसान का बेटा नहीं, बल्कि एक सेठ का बेटा था, जिसे किसी चीज़ की कमी नहीं थी। उसके पिताजी भी अब डैड हो गए थे।



पिताजी जैसे-तैसे बेटे की फीस भर रहे थे, और बेटा!?

बेटा फिजूल-खर्च से बाज़ नहीं आ रहा था। लोगों को दिखाने के लिए वह हर काम करता, हर वस्तु खरीदता, जिसके न होने पर भी जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़नेवाला था।

राघव का एक दोस्त था, जो सीधा – साधा था और शहर की चकाचौंध से दूर था। राघव उसी पर अपना रोब

दिखाता था-देखो, मेरे पास ये है, मेरे पास वो है!

उन दिनों मनीऑर्डर से पैसे भेजे जाते थे। बेटे को जरूरत होती तो पिताजी मनीऑर्डर भेज दिया करते थे।

गांव से शहर आने में इतना ज़्यादा पैसे लगते थे कि पिताजी कभी देखने न आ सके कि बेटा कैसा है, क्या कर रहा है, क्यों इतने पैसे मांगता है! बेटे के किसी खत में इन प्रश्नों के ज़वाब नहीं मिलते थे।

गर्मी की छुट्टी हुई। बेटे ने अपने पिताजी को लिखा – मैं अपने दोस्त के घर जा रहा हूँ। पिताजी ने अनुमति दे दी।

राघव रेल गाड़ी से उतर कर इधर – उधर देख रहा था, तभी एक व्यक्ति ने आकर पूछा-क्या हुआ साहब?

राघव ने कहा-कोई कुली नहीं दिख रहा है!

उस व्यक्ति ने कहा- आज सारे कुली हड़ताल पर हैं, आपको कहाँ जाना है?

राघव ने कागज़ पर लिखा पता दिखा दिया।

-आइए, ये तो कुछ ही दूरी पर है।

राघव के पास समान के नाम पर बस एक बैग था जिसे उस व्यक्ति ने उठा लिया था और अब राघव नवाबों की तरह चला आ रहा था।

जब वह अपने दोस्त के घर पहुंचा, तब उसकी आंखों खुली की खुली रह गईं।

राघव का दोस्त घर में नहीं, बल्कि महल में रहता था और जो व्यक्ति सामान लेकर आया था, वह उसके दोस्त के पिताजी थे, जो लोगों की मदद अपने खाली समय में करते थे।

इतना सब देखकर राघव सहम सा गया। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ।

इस कहानी से मिलने वाली शिक्षा मैं पढ़ने वालों पर छोड़ता हूँ। वह अपने हिसाब से सीख लेने के लिए स्वतंत्र हैं।

जीवेश मौर्य

12-ए

नेताजी सुभाष चंद्र बोस और आज़ाद हिन्द फौज

आज़ाद हिन्द फौज का गठन पहली बार राजा महेन्द्र प्रताप सिंह द्वारा 29 अक्टूबर 1915 को अफगानिस्तान में हुआ था। मूल रूप से उस वक्त यह आजाद हिन्द सरकार की सेना थी, जिसका लक्ष्य अंग्रेजों से लड़कर भारत को स्वतंत्रता दिलाना था। जब दक्षिण-पूर्वी एशिया में जापान के सहयोग द्वारा सुभाष चंद्र बोस ने करीब 40,000 भारतीय स्त्री-पुरुषों की प्रशिक्षित सेना का गठन शुरू किया और उसे भी आजाद हिन्द फौज नाम दिया तो उन्हें आज़ाद हिन्द फौज का सर्वोच्च कमाण्डर नियुक्त करके उनके हाथों में इसकी कमान सौंप दी गई।

आजाद हिन्द फौज के गठन में कैप्टन मोहन सिंह, रासबिहारी बोस एवं निरंजन सिंह गिल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज़ाद हिन्द फौज की स्थापना का विचार सर्वप्रथम मोहन सिंह के मन में आया था। इसी बीच विदेशों में रह रहे भारतीयों के लिए इण्डियन इण्डिपेंडेंस लीग की स्थापना की गई, जिसका प्रथम सम्मेलन जून 1942 ई. में बैंकाक में हुआ।

आरम्भ में इस फौज में जापान द्वारा युद्ध बन्दी बना लिये गये भारतीय सैनिकों को लिया गया था। बाद में इसमें बर्मा और मलाया में स्थित भारतीय स्वयंसेवक भी भर्ती हो गये। आरंभ में इस सेना में लगभग 16,300 सैनिक थे। कालान्तर में जापान ने 60,000 युद्धबंदियों को आज़ाद हिन्द फौज में शामिल होने के लिए छोड़ दिया, पर इसके बाद ही जापानी सरकार और मोहन सिंह के अधीन भारतीय सैनिकों के बीच आज़ाद हिन्द फौज की भूमिका के संबन्ध में विवाद उत्पन्न हो जाने के कारण मोहन सिंह एवं निरंजन सिंह गिल को गिरफ्तार कर लिया गया।

एक वर्ष बाद सुभाष चन्द्र बोस पनडुब्बी द्वारा जर्मनी से जापानी नियंत्रण वाले सिंगापुर पहुँचे और उन्होंने वहाँ पहुँचते ही जून 1943 में टोकियो रेडियो से घोषणा की कि अंग्रेजों से यह आशा करना बिल्कुल व्यर्थ है कि वे स्वयं अपना साम्राज्य छोड़ देंगे। हमें भारत के भीतर व बाहर से स्वतंत्रता के लिये स्वयं संघर्ष करना होगा। इससे प्रफुल्लित होकर रासबिहारी बोस ने 4 जुलाई 1943 को 46 वर्षीय सुभाष को आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व सौंप दिया।

5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हाल के सामने सुप्रीम कमाण्डर के रूप में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जी ने सेना को सम्बोधित करते हुए 'दिल्लीचलो!' का नारा दिया

और जापानी सेना के साथ मिल कर बर्मा सहित आज़ाद हिन्द फौज रंगून (यांगून) से होती हुई थल मार्ग से भारत की ओर बढ़ती हुई 18 मार्च, 1944 ई. को कोहिमा और इम्फ़ाल के भारतीय मैदानी क्षेत्रों में पहुँच गई और ब्रिटिश व कामन वेल्थ सेना से जमकर मोर्चा लिया। बोस ने अपने अनुयायियों को 'जयहिन्द' का अमर नारा दिया और 21 अक्टूबर 1943 में सुभाष चन्द्र बोस ने आज़ाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से सिंगापुर में स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार आज़ाद हिन्द सरकार की स्थापना की। उनके अनुयायी प्रेम से उन्हें नेताजी कहते थे।

अपनी इस सरकार के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा सेनाध्यक्ष तीनों का पद नेताजी ने अकेले संभाला। इसके साथ ही अन्य जिम्मेदारियाँ जैसे वित्त विभाग एस.सी. चटर्जी को, प्रचार विभाग एस.ए. अय्यर को तथा महिला संगठन लक्ष्मी स्वामीनाथन को सौंपा गया। उनके इस सरकार को जर्मनी, जापान, फिलीपीन्स, कोरिया, चीन, इटली और आयरलैंड ने मान्यता दे दी। जापान ने अंडमान व निकोबार द्वीप इस अस्थायी सरकार को दे दिये। नेताजी उन द्वीपों में गये और उनका नया नामकरण किया। अंडमान का नया नाम शहीद द्वीप तथा निकोबार का स्वराज्य द्वीप रखा गया। 30 दिसम्बर 1943 को इन द्वीपों पर स्वतन्त्र भारत का ध्वज भी फहरा दिया गया।

4 फ़रवरी 1944 को आज़ाद हिन्द फौज ने अंग्रेजों पर दोबारा भयंकर आक्रमण किया और कोहिमा जैसे कुछ भारतीय प्रदेशों को अंग्रेजों से मुक्त करा लिया। 6 जुलाई 1944 को उन्होंने रंगून रेडियो स्टेशन से महात्मा गांधी के नाम जारी एक प्रसारण में अपनी स्थिति स्पष्ट की और आज़ाद हिन्द फौज द्वारा लड़ी जा रही इस निर्णायक लड़ाई की जीत के लिये उनकी शुभकामनाएँ माँगीं।

सुभाष चन्द्र बोस द्वारा ही गांधीजी के लिए प्रथम बार राष्ट्रपिता शब्द का प्रयोग किया गया था। इसके अतिरिक्त सुभाष चन्द्र बोस ने फ़ौज के कई बिग्रेड बनाकर उन्हें नाम दिये-महात्मा गाँधी ब्रिगेड, अबुल कलाम आज़ाद ब्रिगेड, जवाहर लाल नेहरू ब्रिगेड तथा सुभाष चन्द्र बोस ब्रिगेड। सुभाष चन्द्र बोस ब्रिगेड के सेनापति शाहनवाज खाँ थे।

21 मार्च 1944 को दिल्ली चलो के नारे के साथ आज़ाद हिंद फौज का हिन्दुस्तान की धरती पर आगमन हुआ। 22 सितम्बर 1944 को शहीदी दिवस मनाते हुये सुभाष चन्द्र बोस ने अपने सैनिकों से मार्मिक शब्दों में कहा -हमारी मातृ-भूमि स्वतन्त्रता की खोज में है। तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा। यह स्वतन्त्रता की देवी की माँग है।

फ़रवरी से लेकर जून 1944 ई.के मध्य तक आज़ाद हिन्द फ़ौज की तीन ब्रिगेडों ने जापानियों के साथ मिलकर भारत की पूर्वी सीमा एवं बर्मा से युद्ध लड़ा किन्तु दुर्भाग्यवश

द्वितीय विश्वयुद्ध का पासा पलट गया। जर्मनी ने हार मान ली और जापान को भी घुटने टेकने पड़े। ऐसे में नेताजी को टोकियो की ओर पलायन करना पड़ा और कहते हैं कि हवाई दुर्घटना में उनका निधन हो गया किन्तु इस बात की पुष्टि अभी तक नहीं हो सकी है।

आज़ाद हिन्द फौज के सैनिक एवं अधिकारियों को अंग्रेज़ों ने 1945 ई. में गिरफ्तार कर लिया और उनका सैनिक अभियान असफल हो गया, किन्तु इस असफलता में भी उनकी जीत छिपी थी। आज़ाद हिन्द फौज के गिरफ्तार सैनिकों एवं अधिकारियों पर अंग्रेज़ सरकार ने दिल्ली के लाल क़िले में नवम्बर, 1945 ई. में झूठा मुकदमा चलाकर मुख्य सेनानी कर्नल सहगल, कर्नल ढिल्लों एवं मेजर शाहवाज ख़ाँ पर राजद्रोह का आरोप लगाया। इनके पक्ष में सर तेज बहादुर सप्रू, जवाहर लाल नेहरू, भूलाभाई देसाई और के.एन.काटजू ने दलीलें दीं,लेकिन फिर भी इन तीनों की फाँसी की सज़ा सुनाई गयी। इस निर्णय के खिलाफ़ पूरे देश में कड़ी प्रतिक्रिया हुई, आम जनमानस भड़क उठा और अपने दिल में जल रही मशालों को हाथों में थामकर उन्होंने इसका विरोध किया, नारे लगाये गये- लाल क़िले को तोड़ दो, आज़ाद हिन्द फौज को छोड़ दो। विवश होकर तत्कालीन वायसराय लॉर्ड वेवेल ने अपने विशेषाधिकार का प्रयोग कर इनकी मृत्यु दण्ड की सज़ा को माफ़ कर दिया।

निस्सन्देह सुभाष उग्र राष्ट्रवादी थे। वे भारत को शीघ्रातिशीघ्र स्वतन्त्रता दिलाने हेतु हिंसात्मक उपायों में आस्था भी रखते थे। इसीलिये उन्होंने आज़ाद हिन्द फौज का गठन किया था।

स्मृति तिवारी
11-डी

दादी मां

मार से बचाई , डांट से बचाई
वह दादी मां, हमें आज याद आई।

जिसने हमें नाम दिया,
जिसने हमें प्यार दिया,
जिसने हमें दुलार दिया,
और हमने उन्हें भुला दिया।



आखिर क्यों करते हैं लोग,
भगवान से नहीं डरते हैं लोग,
ऐसी क्यों उन्हें छोड़ आते हैं लोग?
एक ऐसी दुनिया में जो कभी उनकी थी ही
नहीं।

हमने उनसे बहुत लिया,
लेकिन क्या कभी कुछ दिया?

~शिवेश मौर्य
11-बी

जाने दो !



थोड़े टूटे-फूटे तो हैं, पर जाने दो
 हमने देखा हैराख को भी कर्ज उतारते हुए।
 थोड़े सही गलत हैं, पर जाने दो,
 हमने देखा हैकातिलों को मुस्कुराते हुए।
 थोड़े डगमग हुए हैं कदम, पर जाने दो
 हमने देखा हैबेवफा को खुदा की कसम खाते हुए।
 थोड़ादूर चले गए हैं तुमसे, पर जाने दो
 हमने देखा हैसाथ रह कर भी खामोश जीते हुए।
 थोड़े हंसते झगड़ते रहते हैं, पर जाने दो,
 हमने देखा हैलोगों को भीड़ में तन्हा होते हुए।
 थोड़े टेढे-मेढे हो गए समय की मार से, पर जाने दो,
 हमने देखा है किरदारों को कांच सा बिखरते हुए।
 रहना जरूरी है ना रहे तो बेमतलब जिन्दगी होगी,
 हमने देखा ना रहने पर लोगों को अपनों को भुलाते हुए।

~विदुषी मिश्रा
 11-बी

विज्ञान के चपल चरण

बड़ा विचित्र है इस दुनिया का ताना-बाना।
 मेरी विवेक सीमा से सदा ही बाहर है उसे पाना ।
 देखी यात्रा में कठिनाई,स्टीफन रेल चलाई।
 फलटन ने जलयान चलाया,राइट ने जहाज उड़ाया।
 करने का सबका मनोरंजन,फिल्म लाए एडीसन ।
 मारकोनो से परम सुजान,दिया रेडियो का वरदान ।
 थककर बैठा मानव मौन,ओलीनर लाए ग्रामोफोन ।
 बेल ने टेलीफोन बनाया,घर बैठे वार्तालाप कराया।
 गुटेनबर्ग ने प्रेस निकाला
 छपकर निकाली पुस्तक माला।
 रोएंटजेन थे एक्सरे ज्ञाता भीतर का भी चित्र दिखाता।
 लेखन की दुनिया को देखा वाटरमैन का फाउंटेन पेन।
 रोगों से जग था गमगीन फ्लेमिंग लाए पेन्सिलीन।
 विद्युत की दुनिया को देखा
 पहले न थी ऐसी माया देख दुनिया का अंधियारा,
 एडीसन ने बल्ब जलाया।

~अविनाश कुमार यादव

11-बी

मंज़िल

इतिहास वही हमेशा रचते हैं,
जो गिरकर उठते हैं,
क्या हुआ जो मंज़िल आज ना मिली तुझे ,
उठकर फिर चल तू
तब तक तू चल दे जब तक तू इतिहास ना रच दे ।

हौसला तू अपना खोता है क्यों ?
अपने मंज़िल को पाने से मुखरता है क्यों ?
कोशिश कर तू फिर चल दे ,



जब तू तपेगा तभी तो तू निखरेगा,
बिना संघर्ष इस दुनिया में कोई महान नहीं
होता ,
और बिना मेहनत के कोई काम नहीं होता।

जब एक नन्हीं सी चींटी दाना लेकर चलती है ,
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है ,
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

मेहनत करने से तू डर मत
क्योंकि जो मेहनत करने से डरते हैं
वही सफलता को तरसते हैं गिरकर फिर उठ

और चल दे
मंज़िल को पाने
क्योंकि इतिहास वही तो रचते हैं जो गिरकर उठते हैं।

~मुग्धाराज

11-ब

यादें

चेहरे वही हैं, नकाब बदल गए
मगर जो साथ है वो हैं यादें

लोग वही हैं, किरदार बदल गए
मगर जो साथ है वो हैं यादें

राहें खतम हो गईं, मंज़िलें भी बदल गईं
मगर जो साथ हैं हमारे

कुछ छोड़ गए।
कुछ तोड़ गए
पर जो आज भी वैसी है वो हैं यादें

मंजिलें बदलीं, कफिला बदला
मगर जो साथ है वो हैं यादें

मौसम बदले, इंसान बदला
मगर जो साथ है वो हैं यादें

लकीर बदली, किस्मत भी बदली
मगर जो साथ है वो हैं यादें

मां-बाप हैं, उम्र बदल गईं
मगर जो साथ हैं वो हैं यादें
यार बदले, जमाना बदल गया
मगर जो साथ है वो हैं यादें

हौसले बुलंद हैं, इरादा बदल गया
मगर जो साथ है वो हैं यादें

~श्रेयस मिश्रा

11-बी

गवाह दोनों तरफ से बुलाए जाएं तो बेहतर होगा

अदालत बैठा ली है दो फकीरों की अपने मोहल्ले में
अगर गवाह दोनों तरफ से बुलाए जाएं तो बेहतर होगा

दास्तान दोनों की सुनी जाए तो बेहतर होगा
महफूज दोनों को रखा जाए तो बेहतर होगा
कुछ भी कहने से पहले खुद को उस जगह बिठाया जाए तो बेहतर होगा
गलती दिखाने से पहले खुद को आईना दिखाया जाये तो बेहतर होगा
अब ज़रा फ़र्क समझाया जाए तो बेहतर होगा

मोहल्ले में अगर गवाह दोनों तरफ से बुलाए जाएं तो बेहतर होगा!!
दास्तान क्या बताएँगे हमारी वो महलों में रहनेवाले
जरा फ़कीरों को बुलाया जाए तो बेहतर होगा!!
अपनों ने तो दिखा दी असलियत अपनी
जरा दिल फ़रेबियों से लगाया जाए तो बेहतर होगा
अदालत बैठा ली है उन्होंने अपने मोहल्ले में
अगर गवाह दोनों तरफ से बुलाए जाएं तो बेहतर होगा

~श्रेयस मिश्रा

11-बी

अहम् ब्रह्मास्मि

जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य जी ने वेदों और उपनिषदों में से चार महावाक्यों को चुना, जिनका यदि कोई अर्थ सहित कुटानुवाद समझ ले तो वह आत्मज्ञान और परम ज्ञान की अनुभूति भी कर सकता है। यह चार वाक्य सुनने में तो काफी सरल है परन्तु इनका गूढ अर्थ अपने आप में ही चार पुस्तकें हैं। इसलिए इन्हें महावाक्य कहा जाता है।

यह महावाक्य है :

- 1) अहं ब्रह्मास्मि - मैं ब्रह्म हूँ।
- 2) तत् त्वम् असि - वह ब्रह्म तुम ही हो।
- 3) अयम् अत्मानं ब्रह्म - यह आत्मा ब्रह्म है।
- 4) प्रज्ञानम ब्रह्म - प्रकट ज्ञान ब्रह्म है।

अहं ब्रह्मास्मि अर्थात् 'मैं ब्रह्म हूँ' हूँ। इस प्रकार आत्मा और ब्रह्म एक ही है। इस प्रकार किसी भी तरह का अलगाव या अहंकार उत्पन्न नहीं होता है।

अस्तित्व के प्रकार

यदि हम मंत्र को ध्यान से देखें तो यहाँ पर दो तरह के अस्तित्व की बात की गई है। अब हम एक जीव के अस्तित्व को देखें तो जीव का जीवन या अस्तित्व में होना कई चीजों पर निर्भर करता है। जैसे कि हमें जीवित रहने के लिए हवा चाहिए, पानी चाहिए, खाना चाहिए, हमें सही वातावरण की भी आवश्यकता है। अर्थात् हमारा अस्तित्व शर्त के साथ (Conditional) है। दूसरी तरफ मंत्र के द्वितीय पद जिन्हें ब्रह्म (सार्वभौमिक ऊर्जा) के रूप में रखा गया है। अब ब्रह्म का अस्तित्व शाश्वत है। वह न कभी पैदा हुआ था ना ही कभी उसकी मृत्यु होगी, और ब्रह्म के अस्तित्व को किसी आधार की आवश्यकता नहीं, ब्रह्म हमेशा से है और हमेशा रहेगा। अब दिमाग में यही से एक उलझन पैदा होती है कि यह दोनों चीजें इतनी अलग अलग होते हुए भी एक कैसे हो सकती है!

सीमित और असीमित उर्जा

हमने कई बार यह सुना है और विद्यालय में हमें कई बार यह बात बताई गई है कि हम सब के अन्दर ईश्वर निवास करते हैं और इसलिए हमें सबका आदर करना चाहिए। अब इस बात

का आधार तथा भाव तो बड़ा उत्तम है परन्तु इसे बनाने का तरीका गलत है, क्योंकि यदि ईश्वर हमारे अन्दर वास करते तो हम मरते क्यों और बुरा काम ही क्यों करते? दरसल ईश्वर हमारे अन्दर नहीं, हम सब ईश्वर के अन्दर हैं और यह बात तर्कपूर्ण भी है। उदाहरण के तौर पर समुद्र की लहरें समुद्र में आ सकती हैं, परन्तु एक समुद्र लहरों से तो क्या, लहरों के कुल योग में भी नहीं आएगा। भगवान श्री कृष्ण ने भी श्रीमद् भागवत गीता में कहा है कि "सभी जीवित प्राणी मुझमें निवास करते हैं परन्तु मैं किसी प्राणी में निवास नहीं करता"।

अनुभव की श्रृंखला और प्रक्रिया

अब यदि हम अपने जीवन की तरफ देखे तो हमारा जीवन एक अनुभवों की श्रृंखला है हम हर पल किसी न किसी को अनुभव करते रहते हैं। भले ही हमारा शरीर हर 5-10 साल में बदलता रहे, पर हम हर समय अनुभव करते हैं। अब अनुभव की प्रक्रिया में हमें दो तत्वों की आवश्यकता है। पहला जो की अनुभव कर रहा हो अर्थात् विषय (Subject)। दुसरा जिसे अनुभव की किया जा रहा हो, अर्थात् वस्तु (object)। जैसे हम इस प्रकृति और सृष्टि को अनुभव करते हैं।

अब क्योंकि हम प्रकृति को अनुभव कर रहे हैं, तो प्रकृति भी ब्रह्म हुई क्योंकि प्रकृति भी उसी ब्रह्म से आई है और सबकुछ उसी ब्रह्म से है। अर्थात् जो अनुभव कर रहा है वह भी ब्रह्म है और जिसको अनुभव किया जा रहा है, वह भी ब्रह्म है। इसका तात्पर्य यह है कि ब्रह्म हमारे द्वारा खुद को ही अनुभव कर रहा है। यही है 'अहं ब्रह्मास्मि'। कस्तूरी हिरण जो की जीवन भर अपने माथे से निकलती कस्तूरी सुगंध को अत्यंत व्याकुलता से खोजती है परन्तु उसे यह ज्ञात नहीं होता की जिस गंध को वह खोज रही है, वह तो उसी के भीतर है। इसी तरह जब तक प्राणी को 'अहं ब्रह्मास्मि' का बोध नहीं होता प्राणी सदा व्याकुल रहता है, उसकी इच्छाएं कभी खत्म नहीं होतीं। समस्त सुख- सुविधाएं होने या ना होने के बावजूद कई मनुष्यों को आत्म-संतुष्टि की प्राप्ति नहीं होती है। 'अहं ब्रह्मास्मि' का बोध होने पर प्राणी को यह आभास होता है कि जिस वस्तु का अनुभव करने कि मैं कोशिश कर रहा हूं, वह तो मैं ही हूं।

समुद्री जीवन और थल जीवन का आरंभ हुआ। अब धीरे- धीरे मनुष्य भी अस्तित्व में आए। मनुष्यों ने आग की खोज की, सभ्यतायें बनी, फिर एक दिन एक मनुष्य ने शून्य की खोज की, एक मनुष्य ने गुरुत्वाकर्षण बल को खोजा। ऐसे करते-करते प्राकृतिक विज्ञान को एक

नई पहचान मिली , प्रयोगशालाएँ बनी और आखिरकार आधुनिक युग आया। अब हम मनुष्य ही है जो परमाणु (Atom), कणों (Particles) अध्ययन कर रहे है और उन्हें समझने की कोशिश कर रहे है। अर्थात् जिस उर्जा से हमारा अस्तित्व है, जिससे हम बने हैं या जो हम हैं, उसी का हम अध्ययन कर रहे है, यही बात हमने पहले भी समझी थी कि ब्रह्म हमारे द्वारा स्वयं को ही अनुभव करता है और यही है 'अहं ब्रह्मास्मि'।

~रुद्रांश चौधरी
8-बी

हिमाचल-कथा

मैं और मेरे परिवार ने अपनी गर्मियों की छुट्टियाँ हिमाचल प्रदेश में बिताईं। वहाँ जाने के लिए बनारस स्टेशन से दिल्ली के लिए हम ट्रेन में बैठे। अगली सुबह हम दिल्ली पहुँच गए, और फिर रात की ट्रेन में हिमाचल प्रदेश के लिए बैठे। हिमाचल के रास्ते में काफ़ी सारी लुभावनी चीज़ें नज़र आईं, लेकिन मुझे सबसे अच्छा लगा नंगल डैम जो कि बेहद सुंदर था। अगली सुबह हम अंबअंदौरा स्टेशन पर उतरे, जहाँ से हम सीधे काँगड़ा जिले में एक जगह देहरागोपिपुर चले गए। यह हमारा हिमाचल में पहला दिन था। इसी शाम को हम सब लोग देहरा का सनसेट पॉइंट देखने गए। वहाँ पर हमने एक बहुत ही यादगार समय बिताया। वहाँ की हवा बहुत ही साफ़ और शुद्ध थी। वहाँ पर चारों तरफ सिर्फ पहाड़ियाँ ही पहाड़ियाँ थीं। वहीं दूर हमें थोड़ी सी बर्फीली चोटियाँ, (धौलाधार पर्वत श्रृंखला) दिखाई दे रही थीं। हम वहाँ काफ़ी दिन रुके थे और हमने काफ़ी सारी जगह भी घूमी। हम वहाँ नौ शक्तिपीठों में से संकलित चार मन्दिर घूमे जो हैं, माता ज्वालाजी, माता बगलामुखी, माता चिन्तपूर्णी और माता बज्रेश्वरी जी के।



एक दिन हम लोग धर्मशाला भी गए। जहाँ पर हमने रोपवे से धर्मशाला से मैक्लोडगंज तक की यात्रा भी की, जो काफ़ी रोमांचक थी। बाद में हम लोग तिब्बतियों के मंदिर में गए, जो परमपावन दलाईलामाजी का निवास स्थान भी है। वह मंदिर काफ़ी शांत और साफ-सुथरा था।

वापस आने से पहले हम लोग व्यास नदी के किनारे भी गए, जहाँ मैंने नदी के शीतल जल को महसूस भी किया था। सच में हमें वहाँ बहुत मज़ा आया। मैं इस यात्रा को कभी भी नहीं भूल सकती।

~प्रिया मौर्या

10-ए

सुनो द्रौपदी...!!

सुनो द्रौपदी शस्त्र उठा लो
अब गोविंद ना आयेंगे

छोड़ो मेंहदी खड़ग संभालो
खुद ही अपना चीर बचा लो
ध्यूत बिठाए बैठे शकुनी,
मस्तक सब बिक जायेंगे
सुनो द्रौपदी शस्त्र उठा लो
अब गोविंद ना आयेंगे।

कब तक आस लगाओगी तुम
बिके हुए अखबारों से
कैसी रक्षा मांग रही हो
दुःशासन दरबारों से

स्वयं जो लज्जा हीन पड़े है
वे क्या लाज बचायेंगे,
सुनो द्रौपदी शस्त्र उठा लो
अब गोविंद ना आयेंगे।

कल तक केवल अंधा राजा,
अब गूंगा बहरा भी है
होंठ सिल दिए है जनता के
कानों पर पहरा भी है
तुम ही कहो ये अश्रु तुम्हारे
किसको क्या समझाएंगे,
सुनो द्रौपदी शस्त्र उठा लो
अब गोविंद ना आयेंगे।

~ मान्या
12-ए

अंग्रेजी का भूत

अब सब पर अंग्रेजी का भूत चढ़ा है
घर-घर इसका प्रचार बढ़ा है।
हेलो हाय का बुखार चढ़ा है
नमस्कार बेचारा हताश खड़ा है।



अब केक पेस्ट्री पिज्जा खाते हैं
भूल गए सब माखन रोटी।
गीत भजन तो समझ ना आते
माइकल जैक्सन सबको भाता।
दूध दही से है टूटा सबका नाता
कोल्ड ड्रिंक कॉफी और चाय के पीछे दिल
भाग।
सब ओर आई अंग्रेज़ी की बाहर
संस्कृति पर हो रहा प्रहार।

सूर्याश
9-सी

जगत की प्यास

जगत की जल से प्यास मिटती है
 अगर जल न होता तो क्या होता,
 बिनु पानी सब सून...
 जगत न होता, हम न होते,
 तो यह सृष्टि कैसे होती ?
 सृष्टि न होती तो गंगा न होती,
 सृष्टि न होती तो यमुना न होती,
 सृष्टि न होती तो रामायण न होती,
 सृष्टि न होती तो महाभारत न होती,
 सृष्टि न होती तो संसार न होता,
 सृष्टि न होती तो सूर्य - चन्द्र न होते,
 सृष्टि न होती तो कबीर न होते,
 सृष्टि न होती तो तुलसी न होते,
 तुलसी और कबीर न होते तो
 साहित्य में -राम की अविरल, निर्मल सुंदर छवि न होती,
 जल ही मूलाधार हमारा, मत बहाओ इसको नाली में
 क्योंकि,
 जल ही जीवन है
 मानवता की आँख का पानी,
 सूखना नहीं चाहिए...
 जल से ही जगत है,
 और
 जगत में ही हम हैं...

राघव किंकर
 8-बी

तीन साधुओं की कहानी

तीन साधुओं का एक समूह था।

वे अपने आस-पास के शोर-शराबे से परेशान होकर ऐसे शान्त स्थान की खोज में थे, जहां वे शान्ति से मौन-तपस्या कर सकें।

अन्त में उन्हें महसूस हुआ कि समाज की भीड़ में वे अपनी मौन-तपस्या नहीं कर सकते। अच्छा होगा कि उस पहाड़ पर चले जाएं। वहां शान्ति और मौन भंग करनेवाला कोई नहीं है।

तीनों साधुओं की सहमति बन गई और वे पहाड़ की ओर चल पड़े। रास्ते में बड़े साधु ने कहा-‘हम मौन तपस्या करने जा रहे हैं। वहां हम सबको शत-प्रतिशत मौन रहना है, वरना हमारी तपस्या भंग हो जाएगी। वहां हम दिनभर तपस्या करेंगे।’

-‘हां, हमें मौन रहना है।’ बाकी दोनों छोटे साधुओं ने एक स्वर में कहा।

पहाड़ पर पहुंचकर वे थोड़ी-थोड़ी दूरी पर पद्मासन में बैठ गए और आंख बंद करके तपस्या में लीन हो गए।

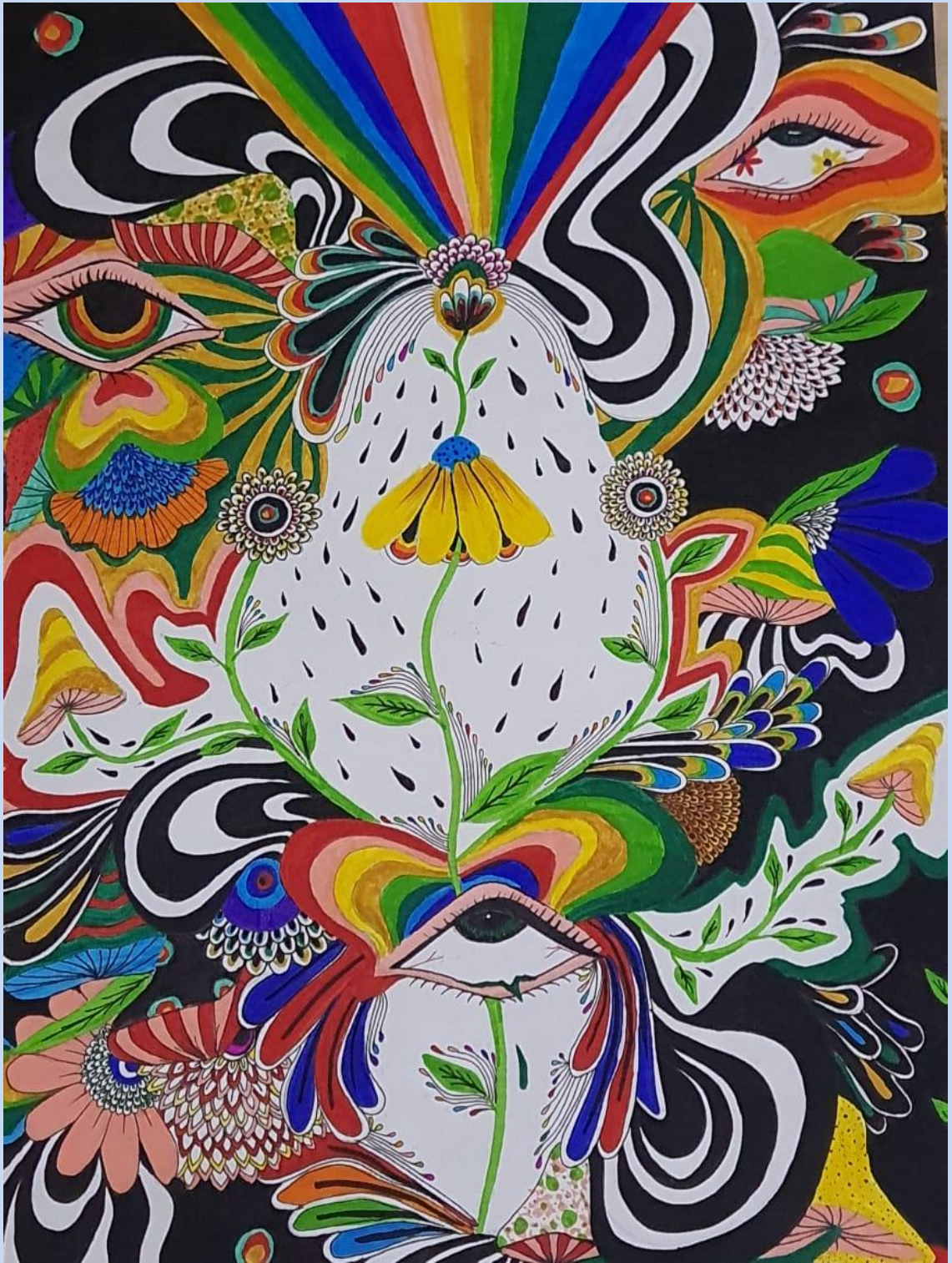
पहाड़ पर चढ़ते-चढ़ते तीनों पसीने से तरबतर हो गए थे। कुछ देर बाद हवा का एक झोंका आया। ऐसे में उन्हें एक सुखद अनुभव हुआ। एक छोटे साधु के मुंह से निकला-‘आ हा! कितनी ठंडी हवा चल रही है!’

बड़ा साधु चीख उठा-‘चुप्प! मौन तपस्या में नहीं बोलना था, फिर भी बोल दिया!’

दूसरा छोटा साधु बोला-‘अच्छा हुआ, मैं कुछ नहीं बोला! है न, गुरुजी!’

अनन्या कुशवाहा

6-बी



I UNDERSTAND...

Must have had a time
Where things won't be going right,
You've dealt with it



And even had a fight,
But may be it didn't sit right.

When life gets tough and tough,
When usual progress doesn't feel enough,
When you doubt yourself for the slightest
thing
And question why you're human being!

The thoughts take you in a long queue,
And then the class gets ahead of you,
A different stress each day
Soon would be handling them as child's
play.

Just have faith in you,
Just know that you can do!
Don't be a shy lone
Step out of your comfort zone.
This is just a piece of advice,
I wish that it felt nice.

**-Himani Anand Sa
XI-B**

FAILURE



Failure doesn't mean – you are a failure.
It means- you have not succeeded.
Failure doesn't mean – you accomplished nothing.
It means – You have learnt something...
Failure doesn't mean – that you have been a fool.
It means-you have a lot of faith...
Failure doesn't mean – you have been disgraced.
It means you are willing to try...
Failure doesn't mean you should give up.
It means you must try harder...
Failure doesn't mean God has abandoned you.
It means-God has better way for you.

Avinash Kumar Yadav
11-B

BRAIN TEASER

Work out the answer to following puzzles –

1. What grows when it eats, but dies when it drinks?
2. What travels around the world yet stays in one corner?
3. Johnny's mother had three children. The first child was named April. The second child was named May. What was the third child's name?
4. Water lilies double in every 24 hrs. In this spring, there is one water lily in a lake. In sixty days, the lake is completely covered with lilies. How many days will it take to cover half of the lake?

Ans. (i) Fire (ii) A stamp (iii) Johnny (iv) 59

Avinash Kumar Yadav
11-B

LIFE : A JOURNEY

Life is changing every moment
Sometime it is harsh sunlight
And sometime it is shadow.
Live every moment to the fullest
This moment might not be
There tomorrow.
The one who respects you from full heart
Is very difficult to be found.
And if someone is there then
Hold his hand forever for he may not
To be found tomorrow.

It is true that soul is paining
And eyes are crying. But it
Happens what is going to happen.
So just leave the thing whose
Mark is not going to be there tomorrow.
Live your life to the fullest
This moment might not be there tomorrow.

Avinash Kumar Yadav
11 B

RECIPE TO MAKE A GOOD STUDENT

INGREDIENTS

Obedience: 4kg
Patience: 1kg
Discipline: 2kg
Efficiency: 500gm
Confidence: 500gm
Respect: 5kg
Unselfishness: 1kg
Competitive Spirit: 2cup

PROCEDURE

Mix patience and discipline in your heart add the competitive Spirit and efficiency. Mix to soften the mixture. Roll the mixture into small ball of love and keep aside. Now add obedience and heat it to make syrup of Honesty. Allow it to cool down and after that decorate it with confidence and unselfishness. The food is ready to serve the community.

Avinash Kumar Yadav
11 -B

REASONS FOR YOU TO HAVE A GOOD SLEEP



Getting enough sleep is essential for helping a person maintain optimal health and well-being. When it comes to their health, sleep is as vital as regular exercise and eating a balanced diet.

1. Better memory and performance

- **Memory:** Sleep disruption may affect memory processing and formation.
- **Performance:** People's performance at work, school, and other settings is affected by sleep disruption. This includes focus, emotional reactivity, decision-making, risk-taking behavior, and judgment.
- **Cognition:** By affecting stress hormones, sleep disruption may affect cognition.

2. Greater athletic performance

- better endurance
- more energy
- better accuracy and reaction time
- faster speed
- better mental functioning

3.Preventing depression

The association between sleep and mental health has been the subject of research for a long time. A 2016 meta-analysis Trusted Source concluded that insomnia is significantly associated with an increased risk of depression.

The review suggests that sleep loss may result in cognitive alterations that lead to depression risk.

Sleep disturbance may also impair emotional regulation and stability, as well as altering neural processes, which may all lead to symptoms of depression.

4. Stronger immune system

Sleep helps the body repair, regenerate, and recover. The immune system is no exception to this relationship. Some research suggests that deep sleep is necessary for the body to repair itself and strengthen the immune system.

However, scientists still need to do further research into the exact mechanisms of sleep in regards to its impact on the body's immune system.

Reetika Kumari

XI – B

THE MASTERPIECE

God took the strength of a mountain,
The majesty of a tree,
The warmth of sun,
The calmness of quiet sea,
The generous soul of nature,
The comforting arm of night,



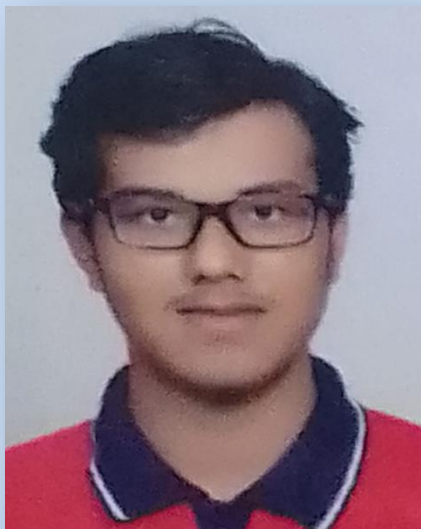
The wisdom of ages,
The power of eagle's flight,
The joy of morning in spring,
The faith as a mustard seed,
The patience of eternity,
The depth of a family need,
Then god combined these qualities there was
nothing more to add,
He knew his masterpiece was complete so he
named it DAD

Apoorva Upadhyaya
XII A

STEPHEN HAWKING

MY FAVOURITE SCIENTIST

The origin of universe has always puzzled the scientists. How did the living and non-living things and processes originate? What was there before the origin of the universe? Is the universe expanding or contracting or fixed and



unchanging? Will the universe ever collapse? If so, when will it collapse and what events would lead to its collapse? Which forces cause its expansion? And, which forces would cause its collapse? These are some of the vital questions on which scientists and philosophers have pondered since time immemorial. One scientist of our times who has attempted to build theory was Stephen Hawking. He was a British scientist who had a curious mind about the universe. Amazingly, Stephen Hawking was physically challenged after the age of 21, he was suffering from a rare

motor neuron disease. Despite his disability which made it impossible for him to move his body, he wanted to develop a theory which could answer all the above questions and may more regarding the universe. This theory was supposed to answer all the questions regarding the universe. This has been considered as the theory of everything.

If we answer these questions using Stephen Hawking's theory, the theory of everything, the answer will be like this:

1. The universe originated through an rapid expansion of space which was termed as big bang, after the explosion the universe was expanding and becoming larger and larger. Because of the explosion there were particles released. These particles were half-made of matter (the stuff which made us) and the rest was made of anti-matter (opposite of matter). When these two meet they destroy each other in a flash. Luckily, due to some mechanics the universe was more favorable of matter.
2. Before the universe originated, there was vacuum which was supposed to have no energy levels but it did had some those were due to quantum fluctuations (appearing of particles and anti-particles and them annihilating each other). There was a possibility that it could lead to the appearance of dark energy which led to big bang.
3. Right now, the universe is expanding, the reason behind this expansion is dark-matter which pushes the universe and battles gravity.
4. Yes, universe can collapse anytime. It will collapse if dark-matter weakens and gravity gets a chance to contract the universe.
5. No one knows when the universe would collapse. Stephen Hawking said that the events after universe collapses will start a new ball full of energy or you can say a new big bang.
6. The only force that causes the expansion of universe is dark-matter and the force which shall be the cause of the contraction of universe is gravity.
There are still two questions about which every scientist wonders: How did the stars originate? And how was life made?
7. The stars were made up of mostly hydrogen atoms; Stephen Hawking did an experiment with some scientists. This experiment led them to know about how galaxies were made. There was one thing he said about this experiment - *'If the universe did not make a mistake neither me nor you would have existed'*. This means that in the experiment there was everything perfect but they couldn't make anything close to galaxies. Because they made everything perfect while it should have been imperfect.

8. The only planet which has life as we know is Earth. Life was formed in the same way as stars which required imperfection. The first life most probably appeared under water. However, there were some more factors that affected the formation of life. These factors were distance from sun and the energy consumed from sun by Earth. Life will last till sun runs out of energy. Then human beings will have to find another solar system to live in.
9. There's another question which is what will happen when sun will run out of energy. The answer to this question is simple. After the sun runs out of energy, it will expand and become larger till it becomes 100 times bigger (maybe big enough to engulf earth's orbit) and its color will change to red so it will be called "red giant". Soon sun will wholly run out of energy and will be extinguished. After sun extinguishes it will become a white dwarf and its gravity will be half of the current Sun. According to Stephen Hawking, sun is in its youth and it has 5 billion years more to live. So those who think sun will explode soon should not be scared cause till that time we will have 1000 times better technology that will help human universe.
10. According to Stephen Hawking, once our universe collapses it will go big bang again. Which means everything would restart.

The ideas of Stephen Hawking were penned down by his wife Jane Hawking because Hawking was physically challenged.

Unfortunately, Stephen Hawking died on 14 March 2018.

But he remains with us through his ideas.

Shashwat Kabeer

X C

WHO AM I?

Waiting for help whenever I cry
Sulking underneath bed, try to hide
As the day gets over and I just find
I am me but who am I?
Smiling through sorrow rather than trying
This is how an introvert lie
Having all but it still clicks like flies
But then I question who am I?
Lacking everything is what I think
Keen to be like others and it just make it worst
Best part is that I try to withdraw from sight
If it is me then who am I?
Falling apart but still like to shine
Never like to share whatever is in mind
Don't be suspicious? It will just drain your time
Am I wrong? I just ask you question. What you think who am I?
Not a loser not a winner neither I am good nor so bad
I am also friendly want to make friends
Playing all day and sing along them
It makes me restless as time flies
Will they accept me for who am I?

PARIDHI VERMA
XII A

A Poem To Motivate You

Forget about the days
When it's been cloudy
but don't forget
Your hours in the sun

Forget about the times
You've been defeated.
But don't forget
the victories you've won.

Forget about the mistakes.
That you can't change now
But don't forget
The lessons that you've learned.

Forget about misfortunes
You have encountered
But don't forget
The times your luck has turned.

Forget about the days
When you've been lonely.
But don't forget
The friendly smile you've seen

Forget about the plans
That didn't seem to work out right
But don't forget
To always have a dream...

(Read somewhere)

Contributed by **SUSHIL KUMAR**
HM

THOUGHTS

1. A bird sitting on a tree
Is never afraid of the
Branch breaking,
Because her trust is
Not on the branch but
On it's wings.

2. Trust
Is like glass,
Once broken it
Will never be the
Same again.

3. Good behavior
Doesn't have any
Monetary value. But,
It has the power to
purchase million Hearts.



WHAT IS A FRIEND

Someone we trust, someone we
care,
Our deepest secrets,
With a friend we all the share.

At times we are lonely,
And covered with fear.
A good friend,
Is always very near.

Attentively listens,
And always offers advice,
A friend keeps no tags
And never looks, at the price.

A friend is everything,
And always much more,
With a huge smile
A friend is always an open door.

Anshika Tripathi
7-B



WHAT MAKES YOUR PARENTS HAPPY?

When I got the prize
 First time in my life
 My parents felt happy because of me
 So what makes you parents happy?
 Whenever I do a good work my parents feel happy because of me
 So what makes your parents happy?

If everybody is glad because of me
 I feel so happy because
 Who will special because of me and they are my parents
 So what makes your parents happy?
 I am a little bird of my parents
 They love me a lot
 They feel proud and special because of me
 So what makes your parents happy?
 If you are able to answer my questions
 So tell me
 What makes your parents happy?

Every child is special for there happy parents
 And this world will be full of love
 Respect and happiness all over the world
 And then everybody will be able to answer
 The question
 What makes your parents happy?

Anshika Tripathi
 7-B

BETTER TOMORROW

Struggle today
For better tomorrow
Hardwork pays
You should always know
No matter how tough
May seem the climb
Keep moving, keep fighting
One minute a time
Perseverance and patience
Go a long way
Because for the sunrise, even
The longest nights make way



Vidyasagar

9-C



WHY ME

If you have to ask why me
When you are feeling really blue
When the world has turned against you
And you don't know what to do,
When it pours colossal raindrops
And the roads a winding mess,
And you are feeling more confused
Than you ever could express

When the saddened sun won't shine
When the stars will not align
When you would rather be
 Inside your bed
 The covers pulled
 Above your head
When life is something
That you have to ask-`Why me?

Vidyasagar
9-C

EDUCATION

For some it is a privilege
For other's it's a right,
The difference between darkness
And a future that is bright.

Some will think a burden
Where others see a gift,
The key to moving forward
And to give your life a lift.

If school is not your calling
Look beyond its door,
The world can be a teacher
Many adventures are in store.

As long as you are learning
Your education grows,
That will lead to contributions
As you share the things you know.

~Manya
XII A

THE SUN

The Sun's **radius** is about 695,000 kilometers (432,000), or 109 times that of Earth. Its **mass** is about 330,000 times that of Earth, comprising about 99.86% of the total mass of the solar system. Roughly three quarters of the Sun's **mass** consists of **hydrogen** (~73%); the rest is mostly **helium** (~25%), with much smaller quantities of heavier elements, including **oxygen, carbon, neon,** and



iron. The Sun is a **G-type main-sequence star** (G2V), informally called a **yellow dwarf**, though its light is actually white. It formed approximately 4.6 billion years ago from the **gravitational collapse** of matter within a region of large **molecular cloud**. The central mass became so hot and dense that it eventually initiated **nuclear fusion** in its **core**. It is thought that almost all stars **form by this process**.

Every second, the Sun's core fuses about 600 million tons of hydrogen into helium, and in the process converts 4 million tons of **matter into energy**. This energy, which can take between 10,000 and 170,000 years to escape the core, is the source of the Sun's light and heat. When **hydrogen fusion** in its core has diminished to the point at which the Sun is no longer in **hydrostatic equilibrium**, its core will undergo a marked increase in density and temperature while its outer layers expand, eventually transforming the Sun into a **red giant**. It is calculated that the Sun will become sufficiently large to engulf the current orbits of **Mercury** and **Venus**, and render **Earth** uninhabitable in five billion years.

Priyesh Kumar Singh
9th B

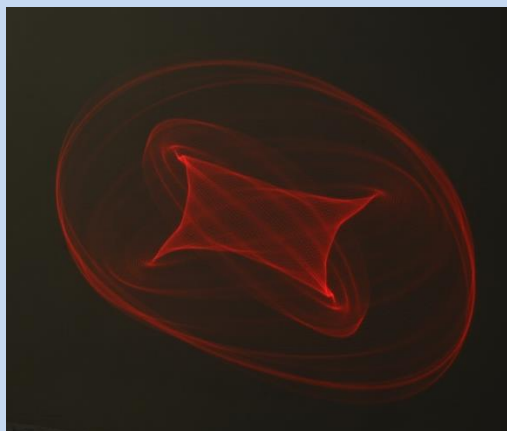
THOSE TEARS

What was that cry for,
Was that a mourn for
The lost childhood,
The freedom a girl gets as
A daughter of her parents,
Which is gone at the very moment?
When that divine red dye
Is put on her forehead
Indicating her being a pair
Of her soulmate, her husband.
Or was it for the joy
Of the newly formed bond,
A new home, a new family.
I don't know
The reason of those diamond tears
That the bride got after her wedding.
She laments
After spending years of quality time,
Enjoying her days,
Those days that she'll never get again.
Those drops had the essence of both
Joy and sorrow
Of a new life at a new home
But to leave the old shelter.
Everyone cried, cried to their fill
Although the pain was hers, which they shared.
Tears rolled down their cheeks
The bride's were wet
As she climbed into the carriage
And went.



~ Shreyas Mondal
XII A

VISUALIZING SOUND



Sound is an incredible source of energy found in our known universe. Sound is produced due to vibrations of medium molecules. Everything, starting from atoms to the atomic clock work on the fundamentals of vibration. Quarks are the basic quantity found in an atom, discovered till the last date, also vibrate in the nucleons. Even in the ancient times, studying and using vibration was a main part of science and religion. In Alchemy, the lost branch of chemistry, it was believed that any element can be converted to other element if they knew the perfect trick. They mainly focused on the conversion of cheap elements to valuable elements like gold. Traces of the process were found in ancient texts and inscriptions which described that they used vibrations to achieve their goal. Their belief was that if they could properly change the vibrations inside an atom, it would result in the change of element. It is still believed that everything is made up of vibrations. The human brain functions with the use of vibration. The mantras mentioned in the Vedas are carefully made to produce the correct vibration

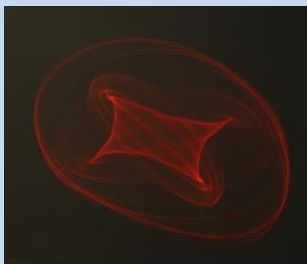


Fig: 155 Hz

required for the desired result. The words are to be pronounced correctly to obtain the result. Vibration is said to be the gateway to connect to the cosmic world. Proper vibration can also change the feelings of a person. Although, sound is one of the most powerful energies of the world, people believe more in what they see than what they hear. So there arises a question, can we see or visualize sound?

There are lots of methods to visualize sound such as using a Chladni Plate, etc., but we will mainly focus on the most affordable, easy and clear visualizer, i.e., laser and membrane.

Fig : Patterns using Multiple Frequencies



First, a membrane (rubber or other) is to be tightly fixed over a hollow cylinder with its area equal to the woofer of the speaker. A small piece of glass is glued in the center of the membrane. Ensure that the membrane should be tight and should vibrate on playing sound. Fix a laser in such way that it bounces of the mirror and projects at a wall.

Fig: 161 Hz



Now play different frequencies through the speaker. On an average, there will be a movement in the light beam from 50Hz to 870Hz. This range will increase or decrease on the thickness and flexibility of membrane used. You will observe various shapes but each shape is formed due to the movement, rotation or elongation of a single ellipse. Try out different frequencies, mix of frequencies, beats frequency, music, etc.

Fig: Combination of frequencies



Fig : Music



*~ SHREYAS MONDAL
XII A*